रघुवीर सहाय

जन्म	:	9 दिसंबर 1929 ।
निधन	:	30 दिसंबर 1990 ।
जन्म-स्थान	:	लखनऊ, उत्तरप्रदेश ।
पिता	:	हरदेव सहाय (एक शिक्षक) ।
शिक्षा	:	एम० ए० (अंग्रेजी), लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ ।
विशेष अभिरुचि	:	संगीत सुनना और फिल्में देखना ।
गतिविधि	:	अपनी और समकालीन कविता के वाचन के लिए 'कौमुदी' नामक कविता केंद्र की स्थापना और संचालन ।
सम्मान	:	'लोग भूल गए हैं' के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार ।
वृत्ति	:	पत्रकारिता । 'नवजीवन' (लखनऊ) से आरंभ, फिर 'समाचार विभाग' आकाशवाणी, नई दिल्ली और फिर 'नवभारत टाइम्स' (नई दिल्ली) में विशेष संवाददाता । 1979 से 1982 तक 'दिनमान' समाचार-साप्ताहिक (नई दिल्ली) के प्रधान संपादक । भारतीय प्रेस परिषद् के सदस्य भी रहे ।
कृतियाँ	:	कविता : 'दूसरा सप्तक' में एक कवि के रूप में शामिल, सीढ़ियों पर धूप में, आत्महत्या के विरुद्ध, हँसो-हँसो जल्दी हँसो, लोग भूल गए हैं, कुछ पते कुछ चिट्ठियाँ । कहानियाँ : सीढ़ियों पर धूप में, रास्ता इधर से है, जो आदमी हम बना रहे हैं । निबंध : सीढ़ियों पर धूप में, दिल्ली मेरा परदेस, लिखने का कारण, ऊबे हुए सुखी, वे और नहीं होंगे जो मारे जाएँगे, यथार्थ यथास्थिति नहीं । इसके अतिरिक्त अनुवाद कार्य भी । संपूर्ण रचनावली छह खंडों में 'राजकमल प्रकाशन' नई दिल्ली से प्रकाशित ।

स्वतंत्रता के बाद की भारत की बहुदलीय संसदीय राजनीति तथा एक पिछड़े सामंती सामाजिक ढाँचे में लोकतांत्रिक व्यवस्था की प्रतिष्ठा और विकास के सामाजिक राजनीतिक परिवेश में रघुवीर सहाय का रचनाकर्म और पत्रकारिता अपना रूपाकार ग्रहण करते हैं । रघुवीर सहाय बीसवीं शती के उत्तरार्ध के एक प्रमुख एवं महत्त्वपूर्ण कवि तथा पत्रकार हैं जिनके रचनाकर्म और पत्रकारिता का आगे की पीढ़ियों पर सकारात्मक प्रभाव पड़ा । उन्होंने कहानियाँ भी लिखी हैं और वे अनेक कारणों से बहुमूल्य मानी जाती हैं । इसके अतिरिक्त रघुवीर सहाय ने विश्व साहित्य से अनेक कृतियों का, विशेष रूप से नाट्य, कथा आदि विधाओं की कृतियों का हिंदी में अनुवाद भी किया है जो उनके रचनाकर्म का ही एक अनिवार्य अंग है ।

रघुवीर सहाय छठे दशक के प्रारंभ में ही अज्ञेय द्वारा संपादित प्रयोगवादी संकलन 'दूसरा सप्तक' में एक कवि के रूप में सामने आए थे । अज्ञेय के सप्तकों और प्रयोगवाद की सबसे बड़ी भूमिका यह है कि छायावाद आदि पिछले काव्य आंदोलनों के बचे-खुचे प्रभावों और संस्कारों से नए प्रयोगों द्वारा पूरी तरह मुक्त होकर कविता की अग्रगति और विकास के लिए नई रचनाभूमि, नई भाषा, मुहावरा और रचनातंत्र की उद्भावना की शुरुआत हुई । सप्तकों और प्रयोगवाद के द्वारा वास्तविक अर्थों में समवेत रूप से नई कविता की पीठिका रची जा सकी तथा नए साहित्य चिंतन और

रचना-उपक्रम की प्रस्तावना की जा सकी । 'दूसरा सप्तक' के सात कवियों में रघुवीर सहाय शामिल थे । उनकी कविता संवेदना, सरोकार, विषयवस्तु, अनुभव, भाषा, शिल्प आदि अनेक तलों पर अपने संकल्प और व्यवहार में नई थी । उनकी विशिष्ट मनोरचना और व्यक्तित्व की अभिव्यक्ति कहानियों और उनकी पत्रकारिता में भी हुई; एक नया क्षितिज खुल पड़ा । निश्चय ही इस बड़ी युगांतरकारी घटना में अनेक कवियों-रचनाकारों की भूमिका थी । यह एक सामूहिक प्रयत्न था । पर इस सामूहिक प्रयत्न में रघुवीर सहाय बिना अगल-बगल झाँके अपनी समूची क्षमता और ईमानदार संलग्नता के साथ जुटे रहे । यह सिलसिला आगे तक चलता रहा और लगभग उनके रचना-दर्शन का अंग बन गया ।

रघुवीर सहाय की कविता ऊपर कथित अपने परिवेश से उलझकर और उसके प्रति अनुभूत सच्चाई की साहसपूर्ण प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए ही अपना औचित्य और सार्थकता हासिल करती है । कई बार यह प्रतिक्रिया निर्मम, तीखी और दाहक भी हो उठती है पर ऐसा हर्गिज नहीं होता कि इस निर्ममता और दाहकता के लिए कवि अपनी पीठ ठोके, इसमें रस या सुख पाए, इसे अपनी वीरमुद्रा बना ले और दूसरे शब्दों में यह उसकी कविता की आभूषण-संपदा बन जाए । रघुवीर सहाय व्यंग्य-कटाक्ष, घृणा और क्रोध का बहुधा उपयोग करते हैं, बड़े सार्थक उपयोग; किंतु उद्देश्य में निहितार्थ परपीड़न का सुख नहीं होता, सच्ची रचनात्मकता या कहें, अर्थपूर्ण नई सामाजिकता होती है । जातिवादी ऊँच-नीच, अमीर-गरीब आदि विभाजनों पर टिकी हुई समाज संरचना; स्वार्थ-दोहन, ठगी और पाखंड पर टिकी हुई राजनीति और संस्कृति को लेकर रघुवीर सहाय सतत सजग और सचेत रहे हैं । उन्हें सौंदर्य से ज्यादा हमेशा ही सत्य कविकर्म का ध्येय लगता रहा है; बल्कि यह कहना शायद अधिक उपयुक्त हो कि सच के साहसपूर्ण उद्घाटन में ही उनके निकट सौंदर्य के लिए सूरत निकल पाती रही है । ऐतिहासिक परिस्थितियों के दबाव में बदलते जाने की लाचारी में लगातार काइयाँ और धूर्त्त बनते जाते समाज के समानांतर रघुवीर सहाय को अपनी कविता की जमीन, पैंतरे और चरित्र बार-बार बदलते रहने पड़े—और यही कवि की रचनायात्रा रही; कभी थकने न देनेवाली, हमेशा चौकस ।

यहाँ प्रस्तुत कविता उनके संग्रह 'आत्महत्या के विरुद्ध' से ली गई है और एक व्यंग्य कविता है । ऐसी व्यंग्य कविता जिसमें हास्य नहीं, आजादी के बाद के सत्ताधारी वर्ग के प्रति रोषपूर्ण तिक्त कटाक्ष है । राष्ट्रीय गान में निहित 'अधिनायक' शब्द को लेकर यह व्यंग्यात्मक कटाक्ष है । आजादी हासिल होने के इतने वर्षों के बाद भी आम आदमी की हालत में कोई बदलाव नहीं आया । कविता में 'हरचरना' इसी आम आदमी का प्रतिनिधि है । वह एक स्कूल जानेवाला बदहाल गरीब लड़का है जो अपनी आर्थिक-सामाजिक हालत के विपरीत औपचारिकतावश सरकारी स्कूल में पढ़ता है । राष्ट्रीय त्योहार के दिन झंडा फहराए जाने के जलसे में वह 'फटा सुथन्ना' पहने वही राष्ट्रगान दुहराता है जिसमें इस लोकतांत्रिक व्यवस्था में भी न जाने किस 'अधिनायक' का गुणगान किया गया है । सत्ताधारी वर्ग बदले हुए जनतांत्रिक संविधान से चलती इस व्यवस्था में भी राजसी ठाठ-बाट वाले भड़कीले रोब-दाब के साथ इस जलसे में शिरकत कर अपना गुणगान अधिनायक के रूप में करवाए जा रहा है । कविता में निहितार्थ ध्वनि यह है मानो इस सत्ताधारी वर्ग की प्रच्छन्न लालसा हो सचमुच अधिनायक अर्थात तानाशाह बनने की ।

◆ ◆ ◆

"समाज में रहते हुए मैं दाढ़ी बढ़ाकर नहीं घूमता, कपड़े इस तरह के नहीं पहनता कि लोग कह उठें, वह देखो, कवि आया; और बात इस तरह से नहीं करता कि लोग परे हटकर अदब से बैठें । पर बात इस तरह जरूर करता हूँ कि सिर्फ वे ही लोग दुबारा मिलना चाहें जो निर्भय हैं और बिना अकारण आदर दिखाए या अकारण आदर माँगे दुबारा मिल सकते हैं ।"

– रघुवीर सहाय : अपनी तस्वीर

अधिनायक

राष्ट्रगीत में भला कौन वह
भारत-भाग्य-विधाता है
फटा सुथन्ना पहने जिसका
गुन हरचरना गाता है ।

मखमल टमटम बल्लम तुरही
पगड़ी छत्र चँवर के साथ
तोप छुड़ाकर ढोल बजाकर
जय-जय कौन कराता है ।

पूरब-पश्चिम से आते हैं
नंगे-बूचे नरकंकाल
सिंहासन पर बैठा, उनके
तमगे कौन लगाता है ।

कौन-कौन है वह जन-गण-मन-
अधिनायक वह महाबली
डरा हुआ मन बेमन जिसका
बाजा रोज बजाता है ।

अभ्यास

कविता के साथ

1. हरचरना कौन है ? उसकी क्या पहचान है ?
2. हरचरना 'हरिचरण' का तद्भव रूप है, कवि ने कविता में 'हरचरना' को रखा है, हरिचरण को नहीं; क्यों ?
3. अधिनायक कौन है ? उसकी क्या पहचान है ?
4. 'जय-जय कराना' का क्या अर्थ है ?
5. 'डरा हुआ मन बेमन जिसका/बाजा रोज बजाता है'– यहाँ 'बेमन' का क्या अर्थ है ?
6. हरचरना अधिनायक के गुण क्यों गाता है ? उसके डर के क्या कारण हैं ?
7. 'बाजा बजाना' का क्या अर्थ है ?
8. 'कौन-कौन है वह जन-गण-मन-अधिनायक वह महाबली' – कवि यहाँ किसकी पहचान कराना चाहता है ?
9. 'कौन-कौन' में पुनरुक्ति है, कवि ने यह प्रयोग किसलिए किया है ?
10. भारत के राष्ट्रगीत 'जन-गण-मन-अधिनायक जय हे' से इस कविता का क्या संबंध है ? वर्णन करें ।
11. कविता का भावार्थ अपने शब्दों में लिखें ।
12. व्याख्या करें –

    पूरब पश्चिम से आते हैं
    नंगे बूचे नर-कंकाल,
    सिंहासन पर बैठा, उनके
    तमगे कौन लगाता है

कविता के आस-पास

1. रघुवीर सहाय की ऐसी कविताएँ जिनमें देश की राजनीतिक-सामाजिक स्थितियों पर व्यंग्य किया गया है, उनका संकलन करें और कक्षा में पाठ करें ।
2. प्रसिद्ध कवि मुक्तिबोध की एक अत्यंत ही चर्चित कविता है–'भूल गलती' । इस कविता की आरंभिक पंक्तियाँ इस प्रकार हैं –

भूल गलती
आज बैठी है जिरहबख्तर पहनकर
तख्त पर दिल के;
चमकते हैं खड़े हथियार उसके दूर तक
आँखें चिलकती हैं नुकीले तेज पत्थर सी

खड़ी हैं सिर झुकाए
सब कतारें
बेजुबाँ बेबस सलाम में,
अनगिनत खंभों व मेहराबों-थमे
दरबारे-आम में ।

इन पंक्तियों से 'अधिनायक' की तुलना करें, आप इनमें क्या साम्य पाते हैं, बताइए ।

भाषा की बात

1. अधिनायक में 'अधि' उपसर्ग है, 'अधि' उपसर्ग से पाँच अन्य शब्द बनाएँ ।
2. निम्नलिखित पदों का विग्रह करें और समास बताएँ –
   राष्ट्रगीत, बेमन, पूरब-पश्चिम, महाबली, नरकंकाल ।
3. कवि ने 'गुन' और 'पच्छिम' जैसे प्रयोग क्यों किए हैं, जबकि इनका शुद्ध रूप क्रमशः 'गुण' और 'पश्चिम' हैं ।
4. तमगे, रोज, बेमन के समानार्थी शब्द क्या होंगे ?
5. 'कौन-कौन है वह जन-गण-मन'-अर्थ की दृष्टि से यह किस प्रकार का वाक्य है ?
6. कवि की काव्यभाषा पर अपनी टिप्पणी लिखें ।

शब्द निधि

विधाता	:	निर्माणकर्ता
सुथन्ना	:	पुराने ढंग की ढीली-ढाली हाफ पैंट
बल्लम	:	भाले और बर्छी की तरह एक शस्त्र
तुरही	:	(तूर्य) युद्ध का घोष करने वाला एक वाद्य
छत्र-चँवर	:	छतरी और चँवर, राजसी चिह्न
तमगे	:	मेडल